بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 28 जून 2024 स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

बनू नज़ीर नामक युद्ध की परिस्थितियों एवं घटनाओं का वर्णन।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-21.06.24

محلہ احمدیہ قادیان۔پنجاب۔143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- बनू नज़ीर के साथ युद्ध का वर्णन हो रहा था। इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ीयल्लाहु अन्हु ने सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन स. नामक पुस्तक में लिखा है कि जब आँहज़रत ﷺ बनू नज़ीर के क़िले की ओर रवाना हुए तो आप स. ने अपने पीछे मदीने की आबादी में अब्दुल्लाह इब्ने मकतूम رضی اللہ عنہ को इमामुस्सलात नियुक्त फ़रमाया तथा ख़ुद सहाबा رضی اللہ عنہم की एक जमाअत के साथ मदीने से निकल कर बनू नज़ीर की बस्ती को घेर लिया जो उस ज़माने की रणनीति के अनुसार क़िले में बन्द हो गए थे। उस अवसर पर अब्दुल्लाह बिन उबी बिन सलूल तथा अन्य मदीने के मुनाफ़िक़ों ने बनू नज़ीर के सरदारों को यह कहला भेजा कि तुम मुसलमानों से कदाचित न दबना, हम तुम्हारा साथ देंगे तथा तुम्हारी तरफ़ से लड़ेंगे। परन्तु जब मूलतः युद्ध आरम्भ हुआ तो मुनाफ़िक़ों को आँहज़रत ﷺ के विरुद्ध खुल्लम खुल्ला मैदान में आने का साहस न हुआ तथा न बनू क़ुरैज़ा को साहस हुआ कि मुसलमानों के विरुद्ध मैदान में आकर बनू नज़ीर की सहायता करें।

अतएव बनू नज़ीर मुसलमानों के मुक़ाबले पर नहीं निकले तथा क़िले में बन्द होकर बैठ गए। चूँकि उनके क़िले उस ज़माने के अनुसार बड़े मज़बूत थे इस लिए उनको संतोष था कि मुसलमान उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे और तंग आकर घेराव छोड़ जाएँगे। किन्तु आप ﷺ ने घेराव जारी रखा। यह घेराव छः दिन और एक रात, तथा एक कथन के अनुसार पन्द्रह दिन तक जारी रहा, बीस तथा तेईस दिनों के कथन भी आए हैं।

कुछ दिन व्यतीत हुए तो आप ﷺ ने क़िलों के बाहर खजूरों के वृक्षों में से कुछ वृक्ष को काटने का आदेश दिया। ये लैना नाम की खजूरों के पेड़ थे जो सामान्यतः इंसानों के खाने के काम में नहीं आता थीं। यहुदी इन वृक्षों की आड़ में क़िलों की दीवारों पर पढ़ कर तीर और पत्थर बरसा रहे थे इस लिए आप ﷺ ने इन वृक्षों को काटने का निर्देश दिया ताकि बनू नज़ीर पर रौब पड़ जाए तथा वे अपने क़िलों के दरवाज़े खोल दें तथा इस प्रकार कुछ वृक्षों को काटने की हानि होने से अनेक मानव प्राणों की क्षति तथा देश में उपद्रव एवं विद्रोह रुक जाए।

ऐसा लगता है कि अल्लाह तआला के विशेष इलहाम द्वारा आप ﷺ ने ये वृक्ष काटने का आदेश दिया था। अतः यह युक्ति अपना काम कर गई तथा अभी केवल छः वृक्ष ही काटे गए थे कि बनू नज़ीर ने सम्भवतः यह सोचकर कि शायद मुसलमान उनके सारे पेड़ जिनमें फलदार वृक्ष भी शामिल थे, काट डालेंगे, रोना पीटना शुरु कर दिया। सामान्य अवस्था में मुसलमानों को शत्रु के फलदार वृक्ष काटने की अनुमति नहीं थी। अतएव बनू नज़ीर ने घबरा कर इस शर्त पर क़िले के द्वार खोल दिए कि हमें यहाँ से अपना सामान लेकर शांति पूर्वक जाने दिया जाए।

यहूदियों की असहाय स्थिति तथा उनकी स्वयं देश से निकल जाने की प्रार्थना करने के बारे में और अधिक इस प्रकार वर्णन है कि मुसलमानों ने इस क़बीले के वृक्ष जलाकर उन्हें और अधिक भयभीत कर दिया। अल्लाह तआला ने उनके दिलों में रौब भर दिया तथा वे हथ्यिार डालने के लिए तय्यार हो गए। उनके देश से निकल जाने के आवेदन पर आप ﷺ ने आदेश दिया कि मदीने से निकल जाओ, तुम्हारे प्राण सुरक्षित रहेंगे, तुम्हारे ऊँट जो सामान उठा सकें वह भी ले जाओ परन्तु किसी हथ्यिार के अतिरिक्त।

आँहज़रत ﷺ पर आरोप लगाने वालों को देखना चाहिए कि आप ﷺ ने समझौते को तोड़ने वाले, शासन के मुख्या आँहज़रत ﷺ को कई बार मारने का षड्यन्त्र एवं प्रयत्न करने वाले, हथियार बन्द होकर देश द्रोह करने पर आतुर तथा शाति प्रस्ताव को घमंड के साथ ठुकराने वाले इन यहूदियों पर पकड़ बना ली थी, किन्तु इसके बावजूद आप ﷺ का शांति प्रिय स्वभाव, सन्धि, रहमत एवं मानवता से स्नेह की अदभुत शान एवं दया भाव प्रकट होता है कि आप ﷺ ने उनको यहाँ से अमन

व सलामती के साथ चले जाने की आज्ञा दे दी। दया एवं उपकार की भावना की स्थिति यह थी कि यह भी अनुमति दे दी कि हथ्यिारों के अतिरिक्त जो भी सामान ले जाना चाहें, ले जाएँ।

आप ﷺ ने देश से निकल जाने की चार शर्तें रखी थीं। नम्बर एक बनू नज़ीर के यहूदी मदीना मुनव्वरा की सीमा से दूर जहाँ चाहें चले जाएँ। दूसरी यह कि बस्ती से जाते समय यहूदी लोग पूर्णतः हथ्यिार रहित होंगे। तीसरी यह कि जितना सामान वे उठा कर ले जाना चाहें, ले जा सकते हैं। चौथे यह कि यहूदियों के यथासम्भव सामान ले जाने के बाद उनकी शेष सम्पत्ति एवं सम्पदा के स्वामी मुसलमान होंगे।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने यहूदियों के बस्ती से निर्वासित होने के विषय में लिखा है कि बनू नज़ीर अपने हाथों से अपने मकानों को तोड़ कर उनके दरवाज़े और चौखटें तथा लकड़ी तक उखेड़ कर अपने साथ ले गए। ये लोग मदीने से उस समारोह एवं धूम-धाम के साथ गाते बजाते हुए निकले कि जैसे एक बारात निकलती है, किन्तु उनकी युद्ध सामग्री तथा चल एवं अचल सम्पत्ति अर्थात बाग़ इत्यादि मुसलमानों के हाथ आए तथा चूँकि यह माल बिन किसी व्यवहारिक युद्ध के मिला था इस लिए इस्लामी शरीअत के अनुसार उसके आवंटन का अधिकार केवल रसूलुल्लाह ﷺ के हाथ में था तथा आप ﷺ ने यह माल अधिकांशतः निर्धन मुहाजिरों में बांट दिया जिनके जीवन यापन का भार अभी तक उस आरम्भिक बन्धुत्व के बन्धन में बन्धे अन्सार की सम्पत्तियों पर था और इस तरह सीधे सीधे अन्सार भी इस माले ग़नीमत में भागीदार बन गए।

जब बनू नज़ीर मुहम्मद बिन मुस्लिमा ؓकी निगरानी में मदीने से निकल रहे थे तो अन्सार ने कुछ लोगों को उनके साथ जाने से रोकना चाहा जो मूलतः अन्सार की संतान में से थे किन्तु अन्सार की मननत मानने के परिणाम स्वरूप यहूदी हो चुके थे तथा बनू नज़ीर उनको अपने साथ ले जाना चाहते थे। परन्तु चूँकि अन्सार की यह मांग इस्लाम के आदेश- ला इकराहा फ़िद्दीन, अर्थात दीन में कोई ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं होनी चाहिए, के विरुद्ध था इस लिए आँहज़रत ने मुसलमानों के विरुद्ध तथा यहूदियों के पक्ष में फ़ैसला किया और फ़रमाया कि जो व्यक्ति भी यहूदी है और जाना चाहता है, हम उसे रोक नहीं सकते परन्तु बनू नज़ीर में से दो आदमी स्वयं अपनी इच्छा से मुसलमान होकर मदीने में ठहर गए।

एक रिवायत आती है कि आँहज़रत ﷺ ने बनू नज़ीर के विषय में यह फ़ैसला किया था कि वे शाम देश की ओर चले जाएँ, अर्थात अरब में न ठहरें। परन्तु बावजूद इसके उनके कुछ सरदार उहारणतः सलाम बिन अबिल हुक़ीक़, किनाना बिन रबीअ तथा हुब्बयी बिन अख़तब इत्यादि तथा एक भाग साधारण लोगों का भी हिजाज़ के उत्तरी भाग में यहूदियों की प्रसिद्ध बस्ती ख़ैबर में जाकर ठहर गया तथा ख़ैबर वालों ने उनकी बड़ी आवभगत की। ये लोग अन्ततः मुसलानों के विरुद्ध

भयानक उपद्रव एवं युद्ध भड़काने का कारण बने। बनू नज़ीर से लड़ाई की नौबत ही नहीं आई थी बल्कि अल्लाह तआला ने नबी का रौब तथा दबदबा उनके दिलों पर डाल दिया था। इस तरह अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ को उनकी धन सम्पत्ति का वारिस बना दिया।

अन्सार के आश्चर्य जनक तथा उच्च स्तरीय प्रेम एवं बलिदान को अभिव्यक्त करने का उदाहरण भी हमें यहाँ मिलता है। रसूलुल्लाह ﷺ ने धन बांटते समय हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शमास ﷺ से फ़रमाया कि मेरे सामने अपनी जाति कि लोगों को एकत्र करो, समस्त अन्सार को बुलाओ। उन्होंने औस तथा ख़िज़रज को बुला लिया। आप ﷺ ने अन्सार मुहाजिरों से सुन्दर व्यहार का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि यदि तुम चाहो तो बनू नज़ीर से प्राप्त माल-ए-फ़े (बिना युद्ध के हाथ आई धन सम्पत्ति) तुम्हारे तथा मुहाजिरों के बीच बाँट दिया जाए। इस अवस्था में मुहाजिर तुम्हारे घरों पर क़बज़ा जमाए तथा तुम्हारे धन के मालिक रहेंगे और यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मैं माले फ़े मुहाजिरों में बाँट दूँ, इस अवस्था में वे तुम्हारे दिए हुए घरों से निकल जाएँगे। इस पर हज़रत सअद बिन अबादा ﷺ और हज़रत सअद बिन मुआज़ ﷺ ने निवेदन किया कि हमारी धन सम्पत्ति इनके पास ही रहने दीजिए तथा बनू नज़ीर की समस्त धन सम्पत्ति भी हमारे मुहाजिर भाईयों को दे दीजिए। मुहाजिरों में से आवाज़ें आने लगीं कि ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! हम इस पर ख़ुश हैं तथा हम इसको स्वीकार करते हैं। आप ﷺ इस बलिदान एवं क़ुर्बानी की भावना को देख कर अत्यंत प्रसन्न हुए और फ़रमाया- ऐ अल्लाह! अन्सार पर तथा उनकी संतानों पर रहम फ़रमा।

यहाँ बनू नज़ीर नामक युद्ध का वर्णन पूरा हुआ, आगे इन्शाअल्लाह अन्य युद्धों का वर्णन होगा।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूरे अनवर ने पाकिस्तान के अहमदियों, पाकिस्तान में सार्वजनिक शांति एवं सुरक्षा की स्थिति, पूरे विश्व के मुसलमानों तथा दुनिया के सामान्य हालात के लिए दुआओं की तहरीक फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, क़ादियान, पंजाब-18001032131